परमागम प्रवेशिका

भाग–2

लेखिका

विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

बी.ए.ऑनर्स, एम.ए., पी.एच.डी. (स्वर्णपदक प्राप्त)

मो. 09321295265 / Email: dpptmumbai@gmail.com

मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रकाशक :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

परमागम प्रवेशिका भाग-2 : विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

● **प्रथम संस्करण** : 1 हजार
(1 जनवरी, 2022)

● **E-book प्रथम संस्करण**
(25 मई, 2016)

मूल्य : **आठ रुपये**

टाइपसैटिंग :
त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स,
ए-4, बापूनगर, जयपुर

मुद्रक :
देशना कम्प्यूटर
60 पूनम विहार
जगतपुरा, जयपुर

विषय-सूची

1.	पंचपरमेष्ठी	1
2.	आत्मा	2
3.	मुक्त जीव	3
4.	दिव्यध्वनि	6
5.	गणधर	7
6.	समवशरण	8
7.	अविनाशी गति	9
8.	संसारी जीव	10
9.	गति	11
10.	गति बंध का कारण	14
11.	सबसे अधिक दु:खी जीव	15
12.	स्थावर जीव	16
13.	साधारण शरीर वनस्पति (निगोद)	17
14.	प्रत्येक शरीर वनस्पति	19
15.	त्रस जीव	20
16.	कर्म	22
17.	शरीर	25
18.	विग्रह गति	27
19.	प्राण	28
20.	आत्मा की शक्तियाँ	30
21.	उपयोग	33
22.	भाव	35
23.	आत्मध्यान	36
24.	निजात्मा	37
25.	मुक्ति (मोक्ष)	38
26.	रत्नत्रय	39
27.	आहार	40
28.	कषाय और चारित्र	42

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक 'प्रश्नोत्तरमाला भाग-1' की लेखिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया बचपन से ही प्रतिभाशाली रही हैं। उन्होंने पूत के लक्षण पालने में ही नज़र आ जाते हैं - कहावत को चरितार्थ किया है। विद्वत्ता की दृष्टि से वे पिताश्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के पदचिन्हों पर ही चल रही हैं। उनके द्वारा अभी तक छोटी-बड़ी 51 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिनकी सूची आगे प्रकाशित की गई है।

साथ-ही-साथ आपने जैन सिद्धान्तों पर आधारित अनेक 'गेम्स' भी बनाए हैं, जिनके खेलने के नियम भी जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराते हैं। इन 'गेम्स' की विशेषता यह है कि इनको खेलने से बच्चों को सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ अहिंसात्मक आचरण की प्रवृत्ति भी सहज विकसित हो जाती है। इनमें जीत हिंसात्मक कार्य मार-पीट से नहीं, ज्ञान-ध्यान से हासिल की जाती है। बच्चों को ज्ञान-ध्यान करने की प्रेरणा मिलती है।

आपने 'आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों (rules and regulations) को ध्यान में रखते हुए आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों और टीकाकारों का सर्वांगीण (सम्पूर्ण) विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है, जो कि विद्वत्जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट (attract) करता है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकें भी अद्यावधि (अब तक) जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्वज्ञान के समावेश के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेदज्ञान से ओतप्रोत हैं। आप विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैली में अध्यात्म को सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रही हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में उन जैन शब्दों, पदों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, जिनको जानने की जिज्ञासा जिनागम पढ़ने वाले प्रत्येक पाठक को होती है। पाठकों की उसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। शीघ्र प्रकाशन व्यवस्था के लिए डॉ. अखिल बंसलजी का बहुत आभार है।

-परमात्मप्रकाश भारिल्ल
कार्यकारी महामंत्री

अपनी बात

वर्षों पहले स्वयं पढ़ते समय जिन–जिन विषयों के संबंध में मुझे विशेष जानकारी की इच्छा होती थी और पढ़ाते समय भी जिज्ञासु छात्रों के मन में जिन विषयों के बारे में विशेष जानकारी की इच्छा होती है; उन–उन विषयों को मैंने इस पुस्तक में 305 प्रश्नोत्तरों में समाहित किया है। पाठकों की यही जिज्ञासा इस पुस्तक को लिखने की मुख्य प्रेरणा रही है।

सभी पाठक इससे लाभान्वित हों – इसी भावना से विराम लेती हूँ।

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

कीमत कम करने में सहयोग

1.	श्री महेश जे. पारेख, मुम्बई	1100.00
2.	स्व. श्री घीसालालजी जैन की पुण्य स्मृति में, नीमच	1100.00
3.	श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, जयपुर	1100.00
4.	श्री कैलाशचंदजी जैन, ठाकुरगंज	251.00
	कुल राशि	**3551.00**

परमागम ऑनर्स के सभी विद्यार्थियों को कुमारी माधुरी जैन, जयपुर एवं श्रीमान मांगीलालजी जैन, मुम्बई वालों की ओर से सप्रेम भेंट।

परमागम प्रवेशिका (भाग–2)

1. पंचपरमेष्ठी

प्रश्न 1 – परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो परमपद में स्थित हों, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 2 –परमेष्ठी कितने होते हैं? नाम बताओ।

उत्तर – अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु – ये पाँच परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 3 –परमेष्ठी को पंचपरमेष्ठी क्यों कहा जाता हैं?

उत्तर – पाँच होने से उन्हें पंचपरमेष्ठी कहा जाता है।

प्रश्न 4 –णमोकार मंत्र में सिद्धों से पहले अरहंतों को क्यों नमस्कार किया गया है?

उत्तर – अरहंतों से उपदेशादिक का विशेष प्रयोजन सिद्ध होता है, इसलिए सिद्धों से पहले अरहंतों को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 5 –पंचपरमेष्ठी किसके आश्रय से बनते हैं?

उत्तर – अपनी आत्मा के आश्रय से।

प्रश्न 6 –हमें किसकी शरण जाना चाहिए?

उत्तर – पंचपरमेष्ठी की।

प्रश्न 7 –शरण किसे कहते हैं?

उत्तर – सहारे को।

प्रश्न 8 –पंचपरमेष्ठी की शरण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – पंचपरमेष्ठी के बताए मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की शरण लेना ही पंचपरमेष्ठी की शरण है।

प्रश्न 9 –आत्मा की शरण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – आत्मा को जानना, पहिचानना; आत्मा में ही जमना, रमना ही आत्मा की शरण है।

2. आत्मा

प्रश्न 1 – आत्मा किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञान-दर्शन स्वभावी जीव तत्त्व को।

प्रश्न 2 – क्या आत्मा इन्द्रियों से देखा-जाना जा सकता है?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 3 – क्या आत्मा अनुभव में आता है?

उत्तर – हाँ।

प्रश्न 4 – क्या आत्मा को छू (पकड़) सकते हैं?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 5 – क्या आत्मा अरस-अरूपी है?

उत्तर – हाँ।

प्रश्न 6 – क्या आत्मा कभी मर सकता है?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 7 – आत्मा अवस्था की अपेक्षा कितने भेद हैं?

उत्तर – आत्मा अवस्था की अपेक्षा तीन भेद हैं – बहिरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मा।

प्रश्न 8 – आत्मा का पर्यायवाची नाम क्या है?

उत्तर – जीव।

रागादि विकारों से व ज्ञान की हीनता से तो जीव निन्दा योग्य होते हैं और रागादिक की हीनता से व ज्ञान की विशेषता से स्तुति योग्य होते हैं; सो अरहंत-सिद्धों के तो सम्पूर्ण रागादि की हीनता और ज्ञान की विशेषता होने से सम्पूर्ण वीतराग-विज्ञान भाव संभव है और आचार्य, उपाध्याय तथा साधुओं को एकदेश रागादिक की हीनता और ज्ञान की विशेषता होने से एकदेश वीतराग-विज्ञान संभव है। इसलिये उन अरहंतादिक को स्तुति योग्य महान जानना।

–मोक्षमार्ग प्रकाशक
(पृष्ठ 4)

3. मुक्त जीव

प्रश्न 1 – कर्मों की अपेक्षा जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – कर्मों की अपेक्षा जीव दो प्रकार के होते हैं – मुक्त और संसारी।

प्रश्न 2 – कर्मों की अपेक्षा संसारी और मुक्त जीवों में क्या अंतर है?

उत्तर – सभी कर्म सहित जीवों को संसारी जीव कहा जाता है और कर्मों से रहित जीवों को मुक्त जीव कहा जाता है। विशेष ध्यान रखने की बात यह है कि सभी कर्मों का नाश एक साथ नहीं हो पाता। जिससे मुक्त जीव के भी कर्म सहित और कर्म रहित की अपेक्षा भेद हो जाते हैं।

प्रश्न 3 – मुक्त जीव कितने प्रकार के होते हैं? नाम सहित बताइए ।

उत्तर– मुक्त जीव दो प्रकार के होते हैं :– १. जीवन –मुक्त और २. देह –मुक्त।

प्रश्न 4 – जीवन मुक्त और देह मुक्त में क्या अंतर है?

उत्तर– चारघाति कर्मों से रहित अरहंत भगवान को जीवन मुक्त कहते हैं। आठ कर्मों से रहित सिद्ध भगवान को देह मुक्त कहते हैं। जीवन मुक्त अवस्था से ही देह मुक्त अवस्था प्राप्त की जा सकती है। उपदेश जीवन मुक्त अवस्था में ही हो सकता है।

प्रश्न 5 – सुखी जीव कौन हैं?

उत्तर – सभी मुक्त जीव सच्चे सुखी हैं।

प्रश्न 6 – क्या मोह के होते हुए सच्चे सुखी हो सकते हैं?

उत्तर– नहीं! यदि मोह के होते हुए सुखी होते तो सभी संसारी जीव सुखी हो जाते । संसारी जीवों को दुःख मोह के कारण ही होता

है । अतः सुखी होने के लिए मोह का नाश अनिवार्य है।

प्रश्न 7 – क्या शरीर के रहते हुए सच्चे सुखी हो सकते हैं ?

उत्तर – हाँ! शरीर के रहते हुए सच्चे सुखी हो सकते हैं। अरहंत भगवान के शरीर होता है, पर वे दुःखी नहीं हैं; क्योंकि उन्हें मोह-राग- द्वेष नहीं है।

प्रश्न 8 – संसारी जीव क्या चाहते हैं?

उत्तर – सच्चा सुख।

प्रश्न 9 – सच्चा सुख कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर – आत्मा के ध्यान से।

प्रश्न 10 – सभी कर्मों से रहित सच्चे सुखी मुक्त जीव कहाँ रहते हैं?

उत्तर– सभी कर्मों से रहित सच्चे सुखी मुक्त जीव सिद्धशिला में रहते हैं।

प्रश्न 11 – सिद्धशिला में रहने वाले जीवों को क्या कहते हैं ?

उत्तर– सिद्ध भगवान ।

प्रश्न 12 – क्या सिद्ध भगवान संसार में पुनः अवतार (जन्म) ले सकते हैं ?

उत्तर – नहीं! सिद्ध भगवान फिर से संसार में जन्म नहीं लेते। वे सिद्ध शिला में ही रहते हुए सदा सुखी ही रहते हैं।

प्रश्न 13 – क्या अरहंत भगवान भक्तों को बचाने के लिए पुनः अवतार ले सकते हैं ?

उत्तर – नहीं! अरहंत भगवान का भी पुनः अवतार नहीं होता । सभी अरहंत भगवान अपनी आयु पूर्ण होने पर सिद्ध ही बनते हैं।

प्रश्न 14 – क्या अरहंत और सिद्ध भगवान संसार के कर्ता-धर्ता, नियंता है?

उत्तर– नहीं! कोई भी भगवान संसार के कर्ता-धर्ता, नियंता नहीं है। वे मात्र ज्ञाता- दृष्टा हैं। वे तीन लोक, तीन काल के समस्त द्रव्यों की समस्त पर्यायों को एक साथ जानते- देखते हैं।

प्रश्न 15 – क्या सभी मुक्त जीव उपदेश देते हैं?

उत्तर– मुक्त जीवों में सभी सिद्ध उपदेश नहीं देते तथा अरहन्तों में कुछ अरहंतों का और सभी तीर्थंकर अरहंतों का उपदेश होता है।

भगवान

जैन दर्शन में जो राग रहित होते हैं और संपूर्ण ज्ञान, केवलज्ञान (सर्वज्ञ) के धारी होते हैं, उन्हें भगवान कहते हैं अर्थात् जो वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं, उन्हें भगवान कहते हैं।

प्रत्येक जीव आत्मध्यान कर भगवान बन सकते हैं।

भगवान बनने की प्रक्रिया तो चारों गति में प्रारंभ हो सकती है अर्थात् सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तो किसी भी गति में हो सकती है, किन्तु भगवान तो मनुष्य गति में पुरुष ही बन सकते हैं। भरतक्षेत्र के आर्य खण्ड में ही पुरुषों में चतुर्थ काल के आठ वर्ष से अधिक उम्र के पुरुष ही भगवान बन सकते हैं।

भगवान बनने वाले पुरुष घर बार छोड़कर मुनिपद धारण करते हैं।

वस्तुतः तो भगवान आत्मध्यान द्वारा बनते हैं। जब आत्मध्यान करते हैं, तो हमारे अंदर स्टेप बाई स्टेप कुछ परिवर्तन सहज होते हैं। राग-द्वेष-भाव धीरे-धीरे कम होते हैं, वीतरागता बढ़ती है। जैसे-जैसे राग कम होता जाता है, वैसे-वैसे जीव परिग्रह कम करता जाता है, विभिन्न प्रकार की प्रतिज्ञाएँ लेने लगता है। अंततः मुनिराज बनकर आत्मध्यान द्वारा चार कर्मों का नाश करने पर भगवान बन जाते हैं।

जैन दर्शन में भगवान दो प्रकार के होते हैं – अरहंत भगवान और सिद्ध भगवान।

4. दिव्यध्वनि

प्रश्न 1 – दिव्यध्वनि किसे कहते हैं?

उत्तर – तीर्थंकरों द्वारा दिए जाने वाले उपदेश को।

प्रश्न 2 – क्या तीर्थंकर प्रेरणा देते हैं?

उत्तर – नहीं, उन्हें प्रेरणा देने की इच्छा नहीं होती; अपितु उनके उपदेश को सुनकर भव्यजीव स्वयं प्रेरित होते हैं।

प्रश्न 3 – क्या दिव्यध्वनि खिरते समय भगवान का मुख हिलता है?

उत्तर – नहीं, उनकी वाणी सर्वांग (पूरे शरीर) से ॐकार रूप में खिरती है।

प्रश्न 4 – दिव्यध्वनि कुल कितने समय खिरती है?

उत्तर – दिव्यध्वनि कुल ७ घंटे १२ मिनिट खिरती है?

प्रश्न 5 – क्या दिव्यध्वनि ७ घंटे १२ मिनिट लगातार खिरती है?

उत्तर – नहीं; दिव्यध्वनि एक बार में २ घंटे २४ मिनिट खिरती है।

प्रश्न 6 – क्या सभी भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है?

उत्तर – नहीं, दिव्यध्वनि सभी तीर्थंकरों भगवानों की व कुछ भगवानों की ही खिरती है।

दिव्यध्वनि

समवशरण में उपस्थित देव, मनुष्य व तिर्यचों के मन में तत्त्व के संबंध में जो-जो भी शंका होती है, उन सब का समाधान उनकी भाषा में उन्हें मिल जाता है। यद्यपि तीर्थंकर की दिव्यध्वनि में तत्त्व का सम्पूर्ण उपदेश ही आता है; किन्तु सभी जीव उसे अपनी-अपनी योग्यतानुसार ही ग्रहण कर पाते हैं, सम्पूर्णतया नहीं। जैसे कि मेघ तो अपरंपार एक ही प्रकार की जल की वर्षा करते हैं; पर नारियल, नीम आदि विभिन्न जाति के भिन्न-भिन्न वृक्ष अथवा तालाब, कुआँ, बावड़ी आदि अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार जल को ग्रहण कर पाते हैं।

5. गणधर

प्रश्न 1 – गणधर किसे कहते हैं?

उत्तर – समवशरण में उपस्थित तीर्थंकर के प्रमुख शिष्य मुनिराजों को गणधर कहते हैं। एक तीर्थंकर के अनेक गणधर हो सकते हैं।

प्रश्न 2 – गणधर की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर – गणधर नियम से द्वादशांग के ज्ञानी होते हैं और चार ज्ञान के धारी होते हैं। वे तीर्थंकरों के समस्त उपदेश को ज्यों का त्यों ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 3 – क्या प्रमुख गणधर की उपस्थिति के बिना दिव्यध्वनि खिर सकती है?

उत्तर – नहीं, प्रमुख गणधर की उपस्थिति के बिना दिव्यध्वनि नहीं खिर सकती।

प्रश्न 4 – तीर्थंकर महावीर की दिव्यध्वनि ६६ दिन बाद क्यों खिरी?

उत्तर – क्योंकि प्रमुख गणधर गौतम उपस्थित नहीं थे।

जिनागम

जिनागम पक्षपात रहित और पूर्वापर विरोध रहित होते हैं। सर्वज्ञ द्वारा कथित होने से उनमें पूर्वापर विरोध नहीं होता है तथा वीतरागी गुरुओं द्वारा रचित होने से व स्याद्वाद रूप होने से वे पक्षपात रहित होते हैं।

यद्यपि शब्द रचना की अपेक्षा आगम पौरुषेय (पुरुष द्वारा निर्मित) हैं, अतः उनका आदि है; पर अनादिगत भाव की अपेक्षा आगम अपौरुषेय हैं, अनादि हैं।

जिनागम के अर्थ को भलीभाँति समझने के लिए उनका पाँच प्रकार से अर्थ समझना चाहिए - शब्दार्थ, मतार्थ, भावार्थ, आगमार्थ और नयार्थ।

जिनागम रूप चक्षु के बिना स्व-पर भेदविज्ञान संभव नहीं है। साधु को आगम चक्षु कहा गया है।

6. समवशरण

प्रश्न 1 – समवशरण किसे कहते हैं?

उत्तर – तीर्थंकरों की उपदेश देनेवाली धर्मसभा को।

प्रश्न 2 – समवशरण किसकी आज्ञा से कौन बनाता है?

उत्तर – सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर बनाता है।

प्रश्न 3 – समवशरण को कुबेर किस प्रकार बनाता है?

उत्तर – विक्रिया ऋद्धि से।

प्रश्न 4 – समवशरण का आकार कैसा होता है?

उत्तर – गोल।

प्रश्न 5 – समवशरण में प्रत्येक दिशा में कितनी सीढ़ियाँ होती हैं?

उत्तर – २०–२० हजार, पर पहली सीढ़ी पर पैर रखते ही बिना थकान के ऊपर पहुँच जाते हैं। जैस– आजकल एक्सीलेटर होते हैं।

प्रश्न 6 – समवशरण में कोट, भूमि आदि कितने होते हैं?

उत्तर – समवशरण में चार कोट, पाँच वेदियाँ, इनके बीच में आठ भूमियाँ और सर्वत्र अन्तर भाग में तीन–तीन पीठ होते हैं। अन्तिम भूमि में १६ दीवारें व उनके बीच १२ कोठे होते हैं।

प्रश्न 7 – समवशरण की प्रारम्भ की सात भूमियों में क्या होता है?

उत्तर – समवशरण में प्रवेश करते ही प्रारंभ की सात भूमियों में पुष्प वाटिकायें, वापियाँ, चैत्यवृक्ष, नाट्यशालाएँ आदि होती हैं; जिनमें देवांगनाएँ नृत्य करती रहती हैं।

प्रश्न 8 – समवशरण के मध्य भगवान के बैठने के स्थान को क्या कहते हैं?

उत्तर – गंधकुटी।

प्रश्न 9 – समवशरण में गंधकुटी पर भगवान कैसे विराजते हैं?

उत्तर – चार अंगुल ऊपर आकाश में।

7. अविनाशी गति

प्रश्न 1 – अविनाशी गति कौन–सी है?

उत्तर – पंचमगति (सिद्ध अवस्था)

प्रश्न 2 – सिद्ध अवस्था अविनाशी क्यों है?

उत्तर – क्योंकि वह स्वभाव के अवलंबन से उत्पन्न जीव की स्वभाव रूप अवस्था है।

प्रश्न 3 – क्या सिद्ध दशा में परिवर्तन होता ही नहीं है?

उत्तर – होता है, पर वह परिवर्तन सदा एक–सा शुद्धरूप ही होता है।

प्रश्न 4 – परिवर्तन होने पर भी सिद्ध दशा को अविनाशी क्यों कहा है?

उत्तर – सदा एक–सा स्वभाव रूप ही परिवर्तन होने के कारण सिद्ध दशा को अविनाशी कहा है।

समवशरण में बैठने की व्यवस्था

समवशरण की अंतिम भूमि में १२ कोठे होते हैं, जिनमें क्रमश: गणधर, मुनिराज, कल्पवासी देवियाँ, अर्यिकाएँ, श्राविकाएँ, ज्योतिषी देवियाँ, व्यन्तर देवियाँ, भवनवासी देवियाँ, भवनवासी देव, व्यन्तर देव, ज्योतिष देव, कल्पवासी देव, मनुष्य व तिर्यंच बैठते हैं। पंचमवेदी के द्वितीय पीठ के ऊपर गंधकुटी होती है।

मिथ्यादृष्टि अभव्य जन प्रारंभ की सात भूमियों में ही उलझ जाते हैं; पर तीव्र रूचि वाले भव्य व्यक्ति ही अंतिम भूमि में प्रवेश कर आत्मकल्याण करते हैं।

8. संसारी जीव

प्रश्न 1 – संसारी जीव कौन कहलाते हैं?

उत्तर – कर्म बंधन सहित चारों गति के जीव संसारी जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 2 – संसारी जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – इंद्रियों की अपेक्षा संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं - स्थावर और त्रस ।

प्रश्न 3 – सांसारिक सुख-दुःख का अनुभव कौन करते हैं?

उत्तर – सभी कर्मों से युक्त संसारी जीव।

प्रश्न 4 – दुःखी कौन हैं?

उत्तर – आठ कर्म सहित संसारी जीव।

प्रश्न 5 – दुःखी कौन होना चाहता है?

उत्तर – कोई नहीं।

प्रश्न 6 – जीव को कर्म का बंधन कब से है?

उत्तर – अनादि से।

प्रश्न 7 – कर्मबद्ध (कर्मों से बंधे हुए) जीव कहाँ रहते हैं?

उत्तर – चारों गतियों में।

आगम और परमागम

पूर्वापर (आगे-पीछे) दोषों से रहित, सम्पूर्ण पदार्थों को बताने वाले आप्त के वचन को आगम कहते हैं और अध्यात्म शास्त्रों को परमागम कहते हैं।

आगम में छह द्रव्यों की मुख्यता से और अध्यात्मरूप परमागम में आत्मद्रव्य की मुख्यता से कथन होता है। आत्मा का साक्षात् हित करने वाला तो अध्यात्म ही है, सभी दुःखों को समाप्त करनेवाला अध्यात्म ही है।

आगम के अभ्यास से अध्यात्म की पुष्टि होती है, अतः ये दोनों विरोधी नहीं; पूरक हैं।

9. गति

प्रश्न 1 – गति किसे कहते हैं?

उत्तर – जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।

प्रश्न 2 – गतियाँ कितनी होती हैं? नाम बताइए।

उत्तर – गतियाँ चार होती है- देव, मनुष्य, नरक, तिर्यंच

प्रश्न 3 – चारों गतियों में सुख कौन-सी गति में है?

उत्तर – किसी भी गति में सच्चा सुख नहीं है।

प्रश्न 4 – चारों गतियाँ विनाशी हैं या अविनाशी? और क्यों?

उत्तर – चारों गतियाँ विनाशी हैं; क्योंकि वे परपदार्थों के अवलंबन से उत्पन्न जीव की विभावरूप अवस्था हैं।

प्रश्न 5 – दुःखी होकर जीव कहाँ भटकता है?

उत्तर – चारों गतियों में।

प्रश्न 6 – जीव गतियों में क्यों घूमता है? उससे क्या भूल होती है?

उत्तर – जब जीव अपने स्वरूप को भूलकर मोह-राग-द्वेष रूपी विकारों को करता है, तब चारों गतियों में घूमता है। अपने स्वरूप को नहीं पहचानना ही उसकी सबसे बड़ी भूल है।

प्रश्न 7 – जीव की इस भूल की सजा क्या है?

उत्तर – जीव का कर्मों से बंधना।

प्रश्न 8 – क्या नारकी मर कर एकेन्द्रिय हो सकता है?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 9 – क्या देव मर कर एकेन्द्रिय हो सकता है?

उत्तर – हाँ।

प्रश्न 10 – क्या नरक गति से सैनी पंचेन्द्रिय ही होते हैं?

उत्तर – हाँ।

प्रश्न 11 – क्या जीव नरकगति से देवगति प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 12 – देवगति से किस–किस गति में जा सकते हैं?

उत्तर – मनुष्य और तिर्यंचगति।

प्रश्न 13 – मनुष्य और तिर्यंच से किस गति में जाते हैं?

उत्तर – चारों गतियों में।

प्रश्न 14 – क्या देव गति से मोक्ष जा सकते हैं?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 15 – मोक्ष किस गति से जाते हैं?

उत्तर – मनुष्य गति से।

प्रश्न 16 – संसार में सबसे अधिक समय जीव कहाँ व्यतीत करता है?

उत्तर – तिर्यंच गति में।

प्रश्न 17 – तिर्यंच गति में सबसे अधिक समय जीव कहाँ व्यतीत करता है?

उत्तर – एकेन्द्रिय में।

प्रश्न 18 – एकेन्द्रिय में सबसे अधिक समय जीव कहाँ व्यतीत करता है?

उत्तर – निगोद में।

प्रश्न 19 – जीव निगोद पर्याय से निकलकर कम–से–कम और अधिक–से–अधिक कितने काल के लिए त्रस पर्याय प्राप्त करता है?

उत्तर – जीव निगोद पर्याय से निकलकर कम–से–कम अंतर्मुहूर्त और अधिक–से–अधिक साधिक (कुछ अधिक) दो हजार सागर तक त्रस पर्याय प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 20 – जो जीव साधिक दो हजार सागर तक त्रस पर्याय धारण करता रहता है, वह त्रस पर्याय में सर्वाधिक समय कहाँ व्यतीत करता है?

उत्तर – देवगति में।

प्रश्न 21 – जीव देवगति में कितना काल व्यतीत करता है?

उत्तर – दो तिहाई काल।

प्रश्न 22 – जीव नरकगति, मनुष्यगति और तिर्यंचगति में कितना काल व्यतीत करता है?

उत्तर – नकर गति में एक तिहाई काल और शेष साधिक समय में जीव मनुष्य व तिर्यंचगति में रहता है।

प्रश्न 23 – देव गति और नरक गति की जघन्य आयु कितनी है?

उत्तर – दस हजार वर्ष।

प्रश्न 24 – देव गति और नरक गति की उत्कृष्ट आयु कितनी है?

उत्तर – तैंतीस सागर।

विधाता कौन?

अपने ही कर्मों के विधाता हैं हम,
अपने ही भविष्य के निर्माता हैं हम।
हमारे भविष्य का विधाता नहीं कोई,
हमारे भविष्य का निर्माता नहीं कोई।
अपनों के भविष्य के विधाता नहीं हम,
अपनों के भविष्य के निर्माता नहीं हम।
नियन्ता नहीं कोई हमारे जीवन का,
नियन्ता नहीं हम किसी के जीवन के।
स्वतंत्र है सभी का परिणमन,
स्वतंत्र है सभी का जीवन।
अपने जीवन के निर्माता हैं हम,
अपने भाग्य विधाता हैं हम।

–डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

10. गति बंध का कारण

प्रश्न 1 – जीव को किन भावों से मनुष्यगति मिलती है?

उत्तर – अल्प आरंभ और अल्पपरिग्रह रखने के भाव से तथा स्वभाव की सरलता से।

प्रश्न 2 – जीव को किन भावों से तिर्यंचगति मिलती है?

उत्तर – मायाचारी के भावों से।

प्रश्न 3 – जीव को किन भावों से नरकगति मिलती है?

उत्तर – बहुत आरंभ और बहुत परिग्रह रखने के भावों से।

प्रश्न 4 – जीव को किन भावों से देवगति मिलती है?

उत्तर – मंदकषाय, शुभभाव और तप से।

प्रश्न 5 – जीव को पंचमगति किन भावों से मिलती है?

उत्तर – वीतराग भाव से।

प्रश्न 6 – वीतराग भाव कैसे होता है?

उत्तर – अपने लक्ष्य से होनेवाले परिणामों से वीतराग भाव होता है।

प्रश्न 7 – अपने लक्ष्य से होने वाले परिणामों का फल क्या है?

उत्तर – बंध का नाश।

प्रश्न 8 – बंध किन भावों से होता है?

उत्तर – मोह–राग–द्वेषरूप भावों से।

प्रश्न 9 – चारों गतियों में जीव को कौन भेजता है?

उत्तर – चारों गतियों में जीव को भेजने वाला अन्य कोई सर्व शक्तिमान नहीं है; अपितु जीव स्वयं ही अपने भावों के अनुसार गतियाँ प्राप्त करता है।

11. सबसे अधिक दुःखी जीव

प्रश्न 1 – सबसे अधिक दुःखी जीव किस गति में है?

उत्तर – तिर्यंच गति में।

प्रश्न 2 – तिर्यंच गति में सबसे अधिक दुःखी कौन–से जीव हैं?

उत्तर – एकेन्द्रिय निगोदिया जीव।

प्रश्न 3 – एकेन्द्रिय जीव सबसे अधिक दुःखी क्यों है?

उत्तर – क्योंकि एकेन्द्रिय जीव में निगोद शामिल है। लब्धि अपर्याप्त निगोदिया जीव एक श्वास के काल में १८ बार जन्मते और मरते हैं तथा जन्म–मरण ही सबसे बड़ा दुःख है। एक बार निगोद पर्याय प्राप्त जीव आसानी से बाहर नहीं निकलता।

प्रश्न 4 – सबसे बड़ा दुःख क्या है?

उत्तर – जन्म–मरण का दुःख।

प्रश्न 5 – क्या एकेन्द्रिय जीवों की कषायें बाह्य में प्रगट होती हैं?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 6 – एकेन्द्रिय जीवों की कषायें प्रगट क्यों नहीं होती हैं?

उत्तर – क्योंकि वे हीन शक्ति वाले हैं।

प्रश्न 7 – भोगों में सुख मानने वाले कहाँ सुख मानते हैं?

उत्तर – देव गति में।

प्रश्न 8 – देव दुःखी है या सुखी? और क्यों?

उत्तर – देव दुःखी ही होते हैं, क्योंकि उनको भी कषायें होती हैं। अन्य संसारी जीवों की अपेक्षा उनमें कषायें मंद होती हैं इसलिए वे मनुष्यों की अपेक्षा सुखी नजर आते हैं, पर वे हैं दुःखी ही।

12. स्थावर जीव

प्रश्न 1 – स्थावर जीव किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन जीवों के स्थावर नामकर्म का उदय होता है, उन्हें स्थावर जीव कहते हैं।

प्रश्न 2 – स्थावर नामकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर – जिसके उदय से एकेन्द्रियों में उत्पत्ति होती है, वह स्थावर नामकर्म है।

प्रश्न 3 – स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – पाँच-पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक।

प्रश्न 4 – सभी स्थावरों के कितनी इंद्रियाँ होती हैं ?

उत्तर– सभी स्थावर जीवों के एकमात्र स्पर्शन इंद्रिय ही होती है। वे उसी के द्वारा जानते हैं।

साधारण शरीर में अनन्त जीवों का जन्म, मरण और श्वासोच्छ्वास समान (साधारण) रूप से होता है अर्थात् जिस शरीर में एक जीव उत्पन्न होता है, वहाँ अनन्त जीवों की उत्पत्ति एकसाथ होती है और एक जीव मरता है तो अनन्त जीव एक साथ मरते हैं। इसीप्रकार श्वास (साँस) का लेना-निकालना भी साथ-साथ होता है। विशेष इतना कि एक ही शरीर में पर्याप्त और अपर्याप्त - दोनों एक साथ उत्पन्न नहीं होते।

13. साधारण शरीर वनस्पति (निगोद)

प्रश्न 1 – साधारण शरीर वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर – अनन्त जीवों के एक शरीर निगोद को ही साधारण शरीर वनस्पति कहते हैं।

प्रश्न 2 – निगोद किसे कहते हैं?

उत्तर – जब एक शरीर के स्वामी अनन्त जीव बराबरी से होते हैं, तो उस शरीर को ही निगोद कहते हैं।

प्रश्न 3 – वनस्पति के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर – दो-साधारण शरीर वनस्पति और प्रत्येक शरीर वनस्पति।

प्रश्न 4 – क्या साधारण शरीर जीवों को ही निगोद कहते हैं?

उत्तर – हाँ, साधारण शरीर जीवों को ही निगोद कहते हैं।

प्रश्न 5 – साधारण शरीर वनस्पतिकायिक निगोदिया जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – दो-सूक्ष्म और बादर (स्थूल)।

प्रश्न 6 – सूक्ष्म और बादर में क्या अंतर है?

उत्तर – जो स्वयं अन्य पदार्थों से नहीं रुकते और न ही अन्य पदार्थों को रोकते हैं उन्हें सूक्ष्म कहते हैं। इनका शरीर आग से जलता नहीं, पानी से गलता नहीं, काटने से कटता नहीं और मुड़ता नहीं।

सूक्ष्म निगोदिया जीव लोक में ठसाठस भरे हैं, वे सूक्ष्म होने से हमारे ज्ञान के विषय नहीं बनते हैं।

जो किसी पदार्थ के आधार से रहते हैं, दूसरों को बाधा देते हैं; स्वयं बाधा को प्राप्त होते हैं, अन्य पदार्थों से रुकते हैं और अन्य पदार्थों को रोकते हैं, वे बादर कहलाते हैं।

प्रश्न 7 – निगोद के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर – दो-नित्य निगोद और इतर निगोद।

प्रश्न 8 – नित्य निगोद किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन्होंने भूतकाल में कभी त्रस पर्याय प्राप्त नहीं की है,

न ही भविष्य में प्राप्त करेंगे – ऐसे जो जीव सदा निगोद में रहेंगे, उन्हें नित्य निगोद कहते हैं अर्थात् नित्य निगोद में ऐसे जीव भी हैं जो कभी निकलेंगे भी नहीं।

प्रश्न 9 – इतर निगोद से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – जिन्होंने पहले भूतकाल में त्रस पर्याय पाई थी अथवा भविष्य में पाएँगे, उन्हें इतर निगोद कहते हैं अर्थात् एक बार नित्यनिगोद से निकलकर अन्य कोई भी पर्याय धारण कर पुनः–पुनः निगोद में जाना इतर निगोद है। इसे अनित्य निगोद भी कहते हैं; और जो चारों गतियों में उत्पन्न होकर पुन: निगोद में चले जाते हैं, वे चतुर्गति निगोद जीव कहे जाते हैं।

प्रश्न 10 – अनादि से जीव को किस शरीर का संबंध रहता है?

उत्तर – नित्य निगोद रूप शरीर का।

प्रश्न 11 – नित्य निगोद से कितने समय में कितने जीव निकलते हैं?

उत्तर – ६ माह ८ समय में ६०८ जीव।

प्रश्न 12 – क्या एक ही निगोद शरीर में पर्याप्त–अपर्याप्त जीव एक साथ पैदा हो सकते हैं?

उत्तर – नहीं, वे एक साथ पैदा नहीं हो सकते; क्योंकि उनके एक साथ समान कर्म ही उदय में आते हैं। उनका जन्म, मरण सभी क्रियाएँ एक साथ ही होती हैं।

प्रश्न 13 – क्या निगोदिया जीव के मरने पर उनका शरीर नष्ट हो जाता है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि एक निगोद शरीर में अनन्तान्त जीव एक साथ उत्पन्न होते हैं, मरते हैं, पर निगोद शरीर ज्यों का त्यों बना रहता है नष्ट नहीं होता।

प्रश्न 14 – निगोदिया जीव की कितनी इन्द्रियाँ होती हैं?

उत्तर – स्थावर होने से इनके एक मात्र स्पर्शन इन्द्रिय होती है।

14. प्रत्येक शरीर वनस्पति

प्रश्न 1 – प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर – जिनका पृथक्–पृथक् शरीर होता है; उन्हें प्रत्येक वनस्पति अथवा प्रत्येक शरीर वनस्पति कहते हैं अर्थात् एक–एक शरीर में एक–एक आत्मा होने को ही प्रत्येक शरीर वनस्पति कहते हैं।

प्रश्न 2 – प्रत्येक वनस्पति कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – प्रत्येक वनस्पति दो प्रकार के होते है – १. अप्रतिष्ठित २. सप्रतिष्ठित।

प्रश्न 3 – अप्रतिष्ठित प्रत्येक शरीर वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस प्रत्येक वनस्पति के शरीर में निगोदिया जीव नहीं रहते हैं। उसे अप्रतिष्ठित प्रत्येक शरीर वनस्पति कहते हैं। जैसे – आम, संतरा।

प्रश्न 4 – सप्रतिष्ठित प्रत्येक शरीर वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस प्रत्येक वनस्पति के शरीर के आधार से निगोदिया जीव रहते हैं। उसे सप्रतिष्ठित प्रत्येक शरीर वनस्पति कहते हैं। अनन्त जीवों का एक शरीर होने से सप्रतिष्ठित प्रत्येक को अनन्तकायिक भी कहते हैं। जैसे – आलु, गाजर, मूली, अदरक।

प्रश्न 5 – क्या पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय और वायुकाय में भी साधारण शरीर होता है?

उत्तर – नहीं, पृथ्वीकायादि जीव प्रत्येक शरीर ही होते हैं।

प्रश्न 6 – क्या प्रत्येक शरीर वनस्पति सूक्ष्म भी होते हैं?

उत्तर – नहीं, प्रत्येक शरीर वनस्पति बादर (स्थूल) ही होते हैं?

प्रश्न 7 – जन पदार्थों को खाने में (अनंत) स्थावर जीवों का घात होता हो, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तर – बहुघात।

प्रश्न 8 – सिद्ध जीव स्थावर होते हैं या त्रस?

उत्तर – दोनों नहीं, क्योंकि ये दोनों भेद संसारियों के हैं।

15. त्रस जीव

प्रश्न 1 – त्रस जीव किसे कहते हैं?

उत्तर – दो इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों को त्रस जीव कहते हैं।

प्रश्न 2 – त्रस जीव कहाँ रहते हैं?

उत्तर – तीनलोक में त्रसनाली के भीतर ही।

प्रश्न 3 – त्रसनाली किसे कहते हैं? और क्यों?

उत्तर – त्रस जीवों के निवास क्षेत्र को त्रसनाली कहते हैं; क्योंकि त्रस जीव मात्र यहीं पाए जाते हैं।

प्रश्न 4 – त्रस जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – दो – विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय।

प्रश्न 5 – विकलेन्द्रिय जीव कौन–कौन से हैं?

उत्तर – द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय सभी जीव विकलेन्द्रिय हैं।

प्रश्न 6 – सकलेन्द्रिय जीव कौन–कौन से हैं?

उत्तर – पंचेन्द्रिय चारों गतियों के सभी जीव (देव, मनुष्य, नारकी और जलचर–थलचर, नभचर, तिर्यंच) सकलेन्द्रिय हैं।

प्रश्न 7 – पंचेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं – संज्ञी (सैनी) और असंज्ञी (असैनी)।

प्रश्न 8 – असंज्ञी जीव किस गति में पाए जाते हैं?

उत्तर – असंज्ञी जीव तिर्यंचगति में ही पाए जाते हैं। चार इन्द्रिय तक के जीव असंज्ञी ही होते हैं।

प्रश्न 9 – जिन पदार्थों के खाने से त्रसजीवों का घात होता हो, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तर – त्रसघात।

प्रश्न 10 – त्रसजीवों के शरीर के अंश का नाम क्या है?

उत्तर – मांस।

प्रश्न 11 – मांस की उत्पत्ति किन जीवों के घात से होती है?

उत्तर – त्रसजीवों के घात से।

प्रश्न 12 – मांस में निरंतर कितने त्रस जीव उत्पन्न होते रहते हैं?

उत्तर – अनन्त।

प्रश्न 13 – अंडा मांसाहार है या शाकाहार?

उत्तर – मांसाहार।

प्रश्न 14 – शाकाहार किसे कहते हैं?

उत्तर – वनस्पति से उत्पन्न खाद्य को।

प्रश्न 15 – जीव को स्थावर– त्रस पर्यायों में कौन घुमाता है?

उत्तर– जीव को स्थावर–त्रस पर्यायों में कोई सर्वशक्तिमान नहीं भेजता। जीव तो जब अपने स्वरूप को भूलकर मोह– राग–द्वेष से कर्म बांधता है, तो स्थावर–त्रस पर्यायों में घूमता रहता है।

कुछ वनस्पतियाँ सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित दोनों प्रकार की हो सकती हैं। जैसे– तिनका, लता, छोटे पेड़, बड़े पेड़, कन्दमूल – ये पाँचों वनस्पतियाँ जब निगोद शरीर के आश्रित हों तो सप्रतिष्ठित प्रत्येक कही जाती हैं तथा निगोद से रहित हो तो अप्रतिष्ठित कहलाती हैं।

सभी वनस्पति बोने के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त तक अप्रतिष्ठित प्रत्येक होती हैं। यहाँ तक कि मूली आदि भी प्रथम अवस्था में जन्म के प्रथम समय से लगाकर अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत नियम से अप्रतिष्ठित प्रत्येक ही होती है। बाद में निगोद जीवों के द्वारा आश्रित किए जाने पर सप्रतिष्ठित प्रत्येक होती है।

किसी वृक्ष का जड़ साधारण होती है, किसी के पत्ते, फूल या फल साधारण होते हैं। किसी के तना व शाखायें भी साधारण होती हैं और किसी के मिले हुए पूर्णरूप से साधारण होते हैं। जैसे– मूली, आलू, अदरक, अरबी आदि सभी जमींकन्द की जड़े साधारण हैं। दूध में आक का दूध साधारण होता है। फूलों में सरसों का फूल साधारण होता है। पर्वों में गन्ने का पर्व (गांठ) और आगे का भाग साधारण होता है। शाखाओं में गँवार पाठा (ऐलोवेरा) की सब शाखाएँ साधारण होती है। वृक्षों में लगी सभी कोंपलें साधारण होती हैं। विशेष इतना कि वे पकने पर प्रत्येक हो जाती हैं।

16. कर्म

प्रश्न 1 – कर्म कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताओ।

उत्तर – कर्म दो प्रकार के होते हैं- भावकर्म और द्रव्यकर्म।

प्रश्न 2 – भावकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मा में उत्पन्न होने वाले मोह-राग-द्वेष भावों को भावकर्म कहते हैं।

प्रश्न 3 – द्रव्यकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर – कार्माण वर्गणा के कर्मरूप परिणमित पुद्‍गलपिंड को द्रव्यकर्म कहते हैं।

प्रश्न 4 – रागादिक भावकर्म का कारण कौन-से कर्म हैं?

उत्तर – ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म।

प्रश्न 5 – ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म का कारण कौन-से कर्म हैं?

उत्तर – रागादिक भावकर्म।

प्रश्न 6 – भावकर्म जीव हैं या अजीव?

उत्तर – जीव।

प्रश्न 7 – द्रव्यकर्म जीव हैं या अजीव?

उत्तर – अजीव।

प्रश्न 8 – अजीव द्रव्यकर्म किस द्रव्य का बना है?

उत्तर – पुद्‍गलद्रव्य का।

प्रश्न 9 – क्या द्रव्यकर्म कभी जीवरूप हो सकते हैं?

उत्तर – नहीं, द्रव्यकर्म का कोई भी परमाणु कभी भी जीवरूप नहीं हो सकता।

प्रश्न 10 – क्या जीव का कोई प्रदेश द्रव्यकर्म रूप हो सकता है?

उत्तर – नहीं, जीव का कोई प्रदेश कभी भी कर्मरूप नहीं हो सकता।

प्रश्न 11 – क्या द्रव्यकर्म आत्मा को जबरदस्ती विकार करा सकते हैं?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 12 – क्या द्रव्यकर्म जीव को दुःखी कर सकता है? सतर्क उत्तर दीजिए।

उत्तर – नहीं, क्योंकि जीव व पुद्‍गल दोनों भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं और एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता नहीं है।

प्रश्न 13 – द्रव्यकर्म कितने प्रकार के होते हैं? और कौन-कौन से?

उत्तर – चार घातिकर्म और चार अघाति कर्म – इसप्रकार कुल आठ प्रकार के द्रव्य कर्म होते हैं।

प्रश्न 14 – घाति कर्मों के नाम बताओ?

उत्तर – ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय।

प्रश्न 15 – अघाति कर्मों के नाम बताओ ?

उत्तर – वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र।

प्रश्न 16 – किन कर्मों के निमित्त से जीव के स्वभाव का घात होता है?

उत्तर – घातिकर्म।

प्रश्न 17 – किन कर्मों के निमित्त से जीव को शरीर – आदि बाह्य सामग्री का संबंध होता है?

उत्तर – अघातिकर्म।

प्रश्न 18 – घाति और अघाति कर्म किनको होते हैं?

उत्तर – सभी संसारी जीवों को।

प्रश्न 19 – घाति कर्म किन्हें नहीं होते?

उत्तर – अरहंतों को और सिद्धों को।

प्रश्न 20 – अघाति कर्म किसे नहीं होते हैं?

उत्तर – मात्र सिद्ध जीवों को।

प्रश्न 21 – किन कर्मों के निमित्त से जीव के ज्ञान-दर्शन स्वभाव पूर्ण प्रगट नहीं होते हैं?

उत्तर – ज्ञानावरण, दर्शनावरण।

प्रश्न 22 – दुःखी कौन से कर्म के निमित्त से होते हैं?

उत्तर – मोहनीय कर्म के उदय के निमित्त से।

प्रश्न 23 – दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य के विघ्न में कौन-सा कर्म निमित्त होता है?

उत्तर – अंतराय कर्म का उदय निमित्त होता है।

प्रश्न 24 – अनुकूल - प्रतिकूल बाह्य संयोग प्राप्त होने में कौन-सा कर्म निमित्त होता है?

उत्तर – वेदनीय कर्म का उदय निमित्त होता है।

प्रश्न 25 – शरीर की रचना में कौन-सा कर्म निमित्त होता है?

उत्तर – नाम कर्म का उदय निमित्त होता है।

प्रश्न 26 – उच्च-नीच कुल की प्राप्ति में कौन-सा कर्म निमित्त होता है?

उत्तर – गोत्र कर्म का उदय निमित्त होता है।

प्रश्न 27 – नोकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर – शरीर और शरीर से संबंधित सभी संयोग जैसे - स्त्री, पुत्र, मकान, रुपया-पैसा आदि सभी संयोगी बाह्य पदार्थ को नोकर्म कहते हैं।

प्रश्न 28 – संसार व मोक्ष के विभाजन का मूल कारण क्या है?

उत्तर – कर्म ही संसार व मोक्ष के विभाजन का मूल कारण है।

17. शरीर

प्रश्न 1 – शरीर कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – पाँच - औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्माण।

प्रश्न 2 – औदारिक शरीर किसे कहते हैं?

उत्तर – स्थूल शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं। यह शरीर सड़ता, गलता और झरता है। यह मनुष्यों और तिर्यंचों के होता है। यह आँखों से दिखता है।

प्रश्न 3 – वैक्रियक शरीर किसे कहते हैं?

उत्तर – जो शरीर विक्रिया द्वारा हल्के-भारी आदि अनेक प्रकार के रूप में किया जा सके, उस शरीर को वैक्रियक शरीर कहते हैं। यह देवों और नारकियों के होता है। इसे हम देख नहीं सकते। यह सड़ता-गलता नहीं है।

प्रश्न 4 – आहारक शरीर किसे कहते हैं?

उत्तर – सूक्ष्म पदार्थों के निर्णय, जिनवंदना और संयम की रक्षा के लिए मुनिराजों के मस्तक से निकलने वाले पुरुषाकार पुतले को आहारक शरीर कहते हैं। अत: यह मुनिराजों को ही होता है। यह अधिक से अधिक अंतर्मुहूर्त रह सकता है।

प्रश्न 5 – तैजस शरीर किसे कहते हैं?

उत्तर – औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीरों को कांति देने वाले शरीर को तैजस शरीर कहते हैं। यह सभी जीवों के होता है।

प्रश्न 6 – कार्माण शरीर किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के समूह को कार्माण शरीर कहते हैं। यही शरीर कर्मरूप होता है। यह सभी संसारी जीवों के होता है।

प्रश्न 7 – पाँचों शरीर उत्तरोत्तर सूक्ष्म हैं या स्थूल?

उत्तर – सूक्ष्म।

प्रश्न 8 – सबसे सूक्ष्म कौन–सा शरीर है?

उत्तर – कार्माण।

प्रश्न 9 – अधिक से अधिक एक साथ कितने शरीर हो सकते हैं? और कौन–कौन से?

उत्तर – अधिक–से–अधिक एक साथ औदारिक, तैजस, कार्माण और आहारक – ये चार शरीर हो सकते हैं।

प्रश्न 10 – कार्माण शरीर का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर – द्रव्यकर्म।

प्रश्न 11 – औदारिक, वैक्रियक, आहारक और तैजस शरीर को क्या कहते हैं?

उत्तर – नोकर्म।

प्रश्न 12 – आहारक शरीर अधिक से अधिक कितने समय तक रहता है?

उत्तर – अंतर्मुहूर्त।

प्रश्न 13 – हर किसी में प्रवेश कौन–से शरीर कर सकते हैं?

उत्तर – वैक्रियक और आहारक

प्रश्न 14 – क्या आहारक और वैक्रियक शरीर एक साथ हो सकते हैं?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 15 – संसारी जीव के साथ अनादि से अब तक लगातार कौन सा शरीर है?

उत्तर – तैजस और कार्माण।

प्रश्न 16 – कम–से–कम कितने शरीर रहते हैं? और कहाँ?

उत्तर – कम–से–कम दो शरीर –तैजस और कार्माण विग्रहगति में रहते हैं।

18. विग्रह गति

प्रश्न 1 – विग्रह गति किसे कहते हैं?

उत्तर – एक शरीर छोड़ने के पश्चात् दूसरे शरीर की प्राप्ति के पूर्व की बीच की अवस्था को विग्रहगति कहते हैं।

प्रश्न 2 – एक शरीर छोड़ने के बाद जीव अधिक–से–अधिक कितने समय में नियम से नया शरीर धारण करता है?

उत्तर – चौथे समय[१] में।

प्रश्न 3 – विग्रह गति का समय कम–से–कम कितना होता है?

उत्तर – एक समय।

प्रश्न 4 – विग्रह गति में जीव के साथ कौन से शरीर रहते हैं?

उत्तर – दो–तैजस और कार्माण।

प्रश्न 5 – क्या विग्रह गति में इन्द्रियाँ व मन होते हैं? कारण बताओ।

उत्तर – नहीं, विग्रह गति में इन्द्रियाँ व मन नहीं होते हैं; क्योंकि इन्द्रियाँ और मन तैजस व कार्माण शरीर में नहीं होते हैं।

अतीन्द्रिय सुख

इन्द्रियों के सहयोग के बिना सीधा आत्मा से होने वाला सुख अतीन्द्रिय सुख है। अतीन्द्रिय सुख यदि एकबार पूर्णता को प्राप्त हो जाए तो सदा बना रहता है, कभी समाप्त नहीं होता। सदा एकसा ही रहता है, बदलता नहीं अर्थात् उस सुख में कभी सुख, कभी दुःख का आभास नहीं होता, वह सदा सुख रूप ही रहता है। जैसे – संसार में हमें कभी मीठा खाने में सुख लगता है, कभी नहीं लगता। एक ही वस्तु किसी को सुख देती है, किसी को दुःख। जिस वस्तु की प्राप्ति में हमें कभी सुख महसूस होता था, उसी की प्राप्ति में हमें दुःख भी लगने लगता है। इन्द्रिय सुखों के साथ ऐसा होता है; क्योंकि इन्द्रिय सुख क्षणस्थायी, क्षणभंगुर हैं; किन्तु अतीन्द्रिय सुख के साथ ऐसा नहीं होता।

१. काल के छोटे से छोटे अंश को समय कहते हैं।

19. प्राण

प्रश्न 1 – जिनके द्वारा जीव जीता है, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तर –प्राण।

प्रश्न 2 – प्राण कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – प्राण दो प्रकार के होते हैं– भावप्राण (निश्चयप्राण) और द्रव्यप्राण (व्यवहारप्राण)

प्रश्न 3 – भावप्राण किसे कहते हैं?

उत्तर – चैतन्यप्राणों को।

प्रश्न 4 – चैतन्यप्राण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – जीव की ज्ञान दर्शनरूप चैतन्य शक्ति ही चैतन्य प्राण है।

प्रश्न 5 – द्रव्यप्राण किससे बने हैं?

उत्तर – पुद्गल से।

प्रश्न 6 – द्रव्यप्राण कितने होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – दश – आयु, श्वासोच्छ्वास, पांच इन्द्रिय और तीन बल।

प्रश्न 7 – तीन बल प्राण कौन-कौन से हैं?

उत्तर – काय, वचन और मन।

प्रश्न 8 – पाँच इन्द्रिय प्राणों के नाम बताइए।

उत्तर – स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण।

प्रश्न 9 – एकेन्द्रिय जीवों के कितने प्राण होते हैं?

उत्तर – चार (आयु, श्वासोच्छ्वास, स्पर्शन इन्द्रिय और काय)

प्रश्न 10 – संज्ञी पंचेन्द्रियों के कितने प्राण होते हैं?

उत्तर – दश।

प्रश्न 11 – भाव प्राण के कितने भेद हैं ?

उत्तर – भाव प्राण के दो भेद हैं – भावेन्द्रियाँ और भावबल।

प्रश्न 12 – भावेन्द्रिय के कितने भेद हैं।

उत्तर – भावेन्द्रिय के पाँच भेद हैं- (१) स्पर्श इन्द्रिय (२) रसना इन्द्रिय (३) घ्राण इन्द्रिय (४) चक्षु इन्द्रिय और (५) कर्ण इन्द्रिय।

प्रश्न 13 – भावबल प्राण के कितने भेद हैं?

उत्तर – भावबल के तीन भेद हैं – (१) मनोबल (२) वचनबल और (३) कायबल।

प्रश्न 14 – भावेन्द्रियाँ किस गुण की पर्याय हैं।

उत्तर – भावेन्द्रियाँ ज्ञान गुण की मति रूप पर्यायें हैं।

प्रश्न 15 – भावबल प्राण किस गुण की पर्याय है?

उत्तर – भावबल प्राण जीव के वीर्यगुण की पर्याय है।

कर्मों का फल

जो किसी का बुरा करना चाहते हैं,
वो सबसे पहले अपनी कब्र खोदते हैं।
वो सबसे पहले स्वयं उसमें गिरते हैं,
वो सबसे पहले स्वयं दुःख भोगते हैं।
दूसरों का उसमें गिरना – न गिरना,
उसके पुण्य-पाप के आधीन है।
हमारे हाथ तो हमारे भाव करना है,
हमारे साथ तो फल रहता है।
भाव करने से कर्म बंधते हैं,
हमारे साथ भी कर्म ही रहते हैं।
अपने अच्छे बुरे भावों का फल सभी पाते हैं,
अपने सभी कर्मों का फल हम ही भोगते हैं।

–डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

20. आत्मा की शक्तियाँ

प्रश्न 1 – आत्मा में कितनी शक्तियाँ हैं?

उत्तर – आत्मा में अनंत शक्तियाँ होती हैं। जिनमें से ४७ शक्तियों की चर्चा समयसार में की गई है।

प्रश्न 2 – जीव में शक्तियाँ किस कर्म के अभाव से होती हैं?

उत्तर – जीव में शक्तियाँ कर्म के सद्भाव या अभाव से नहीं होतीं, वे जीव का स्वभाव हैं।

प्रश्न 3 – यह शक्तियाँ आत्मा में कब से हैं? कब तक रहेंगी?

उत्तर – स्वभाव होने से अनादि से हैं, अनन्त काल तक रहेंगी।

प्रश्न 4 – जीव की शक्तियाँ किस भाव रूप होती हैं?

उत्तर – पारिणामिक भाव रूप।[१]

प्रश्न 5 – पारिणामिक भाव जीव में कब तक रहता है?

उत्तर – यह भाव जीव में सदा काल रहता है।

प्रश्न 6 – आत्मा की अनंत शक्तियों में प्रदेशभेद है या नहीं?

उत्तर – नहीं, क्योंकि आत्मा की सभी शक्तियाँ आत्मा के सभी प्रदेशों में रहती है।

प्रश्न 7 – आत्मा की अनंत शक्तियों में कौन–सा भेद है?

उत्तर – लक्षणभेद, स्वरूपभेद।

प्रश्न 8 – क्या आत्मा में शक्तियाँ क्रम से रहती हैं?

उत्तर – नहीं, अक्रम से एकसाथ रहती हैं।

प्रश्न 9 – शुद्ध चैतन्य भाव प्राणों को धारण करने वाली कौन सी शक्ति है?

उत्तर – जीवत्व शक्ति।

१. पारिणामिक भाव की विशेष जानकारी के लिए देखिए – लेखिका की अन्य कृति परमागम प्रवेशिका भाग–३, जीव के असाधारण भाव में।

प्रश्न 10 – जीवत्व शक्ति क्या बताती है?

उत्तर – देह के संयोग से हमारा जीवन नहीं है।

प्रश्न 11 – जीवत्व शक्ति के कारण आत्मा का क्या नाम है?

उत्तर – जीव।

प्रश्न 12 – जीवत्व शक्ति के कारण आत्मा कब तक जीता है?

उत्तर – अनादि–अनंत काल तक।

प्रश्न 13 – आत्मा कभी मरता क्यों नहीं है?

उत्तर – आत्मा जीवत्व शक्ति के कारण कभी मरता नहीं है; क्योंकि जीव के जीवन का आधार निश्चय से जीवत्व शक्ति है।

प्रश्न 14 – जीव के जीवन का आधार व्यवहार से क्या है?

उत्तर – जीव के जीवन का आधार व्यवहार से भोजन, हवा, पानी, श्वासोच्छ्वास आदि हैं।

प्रश्न 15 – जीव का मरणभय कैसे दूर हो सकता है?

उत्तर – जीवत्व शक्ति की सही समझ से।

प्रश्न 16 – क्या जीवत्व शक्ति मरण से सुरक्षा प्रदान करने वाली है? सतर्क उत्तर दीजिए।

उत्तर – हाँ, यदि अपनी आत्मा की शक्तिरूप अस्तित्व माना तो इसका ज्ञान हमें मरण से सुरक्षा प्रदान करता हैं; पर जब मरण आत्मा से देह का वियोग है तो मरण तो स्वकाल में होगा ही; क्योंकि देह का संयोग त्रिकाली नहीं है। जीवत्व शक्ति तो चैतन्य रूप भावप्राणों की सुरक्षा की गारण्टी देती है, देह के संयोग की सुरक्षा की नहीं।

प्रश्न 17 – अचेतन जड़ पदार्थों से आत्मा को भिन्न रखने वाली कौन–सी शक्ति है?

उत्तर – चितिशक्ति।

प्रश्न 18 – चितिशक्ति क्या बताती है?

उत्तर – हम देह रूप नहीं है, अजीव नहीं है।

प्रश्न 19 – आत्मा कभी अजीव क्यों नहीं होता?

उत्तर – चिति शक्ति के कारण।

प्रश्न 20 – चिति शक्ति के कारण आत्मा क्या कहलाता है?

उत्तर – चेतन।

प्रश्न 21 – साकार उपयोगमयी कौन–सी शक्ति है?

उत्तर – ज्ञान शक्ति।

दर्शनोपयोग	**ज्ञानोपयोग**
१. दर्शनगुण का परिणमन है।	१. ज्ञानगुण का परिणमन है।
२. दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम या क्षय के समय प्रगट होनेवाली जीव की अवस्था है।	२. ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम या क्षय से प्रगट होनेवाली जीव की अवस्था है।
३. वस्तु का सामान्य प्रतिभास मात्र होता है।	३. वस्तु की विशेष जानकारी होती है।
४. उसका स्वरूप निर्विकल्प, निराकार और निर्व्यवसायमय है।	४. इसका स्वरूप साकार, सविकल्प और व्यवसायमय है।
५. दर्शनोपयोग के बाद ज्ञानोपयोग होने का कोई नियम नहीं है। कभी होता है और कभी नहीं होता है।	५. छद्मस्थ दशा में नियम से दर्शनोपयोग पूर्वक ही ज्ञानोपयोग होता है।
६. दर्शनोपयोग में तत्त्वनिर्णय की क्षमता नहीं है।	६. इसमें तत्त्वनिर्णय और भेदविज्ञान होता है।
७. दर्शनोपयोग के ४ भेद हैं।	७. ज्ञानोपयोग के ८ भेद हैं।

21. उपयोग

प्रश्न 1 – उपयोग किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर – ज्ञान–दर्शनरूप चेतना गुण की परिणति को उपयोग कहते हैं। वह दो प्रकार का होता है – साकार उपयोग और निराकार उपयोग।

प्रश्न 2 – साकार उपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर – भेद सहित विशेष जानने को।

प्रश्न 3 – निराकार उपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर – भेद रहित सामान्य अवलोकन को।

प्रश्न 4 – निराकार उपयोगमयी कौन–सी शक्ति है?

उत्तर – दृशि शक्ति।

प्रश्न 5 – दृशि शक्ति के कारण आत्मा क्या कहलाता है?

उत्तर – दृष्टा।

प्रश्न 6 – ज्ञान शक्ति के कारण आत्मा क्या कहलाता है?

उत्तर – ज्ञाता।

प्रश्न 7 – क्या आत्मा कभी ज्ञान–दर्शन से रहित हो सकता है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि ज्ञान और दृशि शक्ति जीव का स्वरूप होने से आत्मा में सदा रहती हैं।

प्रश्न 8 – क्या अन्य द्रव्यों में भी ज्ञान–दर्शन पाया जाता है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि ज्ञान और दृशि शक्ति आत्मा (जीव) के अतिरिक्त अन्य द्रव्य में नहीं होती।

प्रश्न 9 – सुख शक्ति का क्या स्वरूप है ?

उत्तर – सुख शक्ति अनाकुलता रूप, आनंद रूप है।

प्रश्न 10 – इसके जानने से क्या लाभ है?

उत्तर– इसके जानने से पता चलता है कि हम (आत्मा) स्वयं सुख के पिण्ड हैं, आनंद के कंद हैं, अतः हमें सुख प्राप्ति के लिए पर की ओर देखने की रंचमात्र आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 11 – क्या आत्मा के उपयोग स्वरूप का पर के द्वारा हरण हो सकता है?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न 12 – क्या आत्मा के उपयोग स्वरूप को पर के आलंबन की आवश्यकता है?

उत्तर – नहीं।

मौन ! मौन !! मौन !!!

कुछ न कहकर भी,
बहुत कुछ कहने की कला है मौन।
विवादों से बचने की कला है मौन,
अपने को समेटने की कला है मौन।
अपने को समझने के लिए रहना होगा मौन,
अपने को जानने के लिए रहना होगा मौन।
अपने को पहिचानने के लिए रहना होगा मौन,
अपने में जमने के लिए रहना होगा मौन।
अपने को जानने के लिए रहना होगा मौन,
अपने को पहिचानने के लिए रहना होगा मौन।
अपनी शांति के लिए होना होगा मौन,
अपनी मुक्ति के लिए होना होगा मौन।

–डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

22. भाव

प्रश्न 1 – सच्चा सुख किन भावों से मिलता है?

उत्तर – शुद्धभावों से।

प्रश्न 2 – भाव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – दो–शुद्ध और अशुद्ध।

प्रश्न 3 – अशुद्ध भाव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – दो – शुभ और अशुभ।

प्रश्न 4 – शुभ और अशुभ भावों से किस का बंध होता है?

उत्तर – पुण्य और पाप का।

प्रश्न 5 – शुद्ध भावों से किस का बंध होता है?

उत्तर – शुद्ध भावों से बंध नहीं, बंध का अभाव होता है।

प्रश्न 6 – शुद्ध भाव अधिकतम कितने समय तक रह सकते हैं?

उत्तर – अनन्तकाल।

प्रश्न 7 – शुभ–अशुभ भाव अधिकतम कितने समय तक रह सकते हैं?

उत्तर – शुभ –अशुभ भाव एक साथ अंतर्मुहूर्त से अधिक नहीं रह सकते, वे ४८ मिनिट के अंदर बदलते ही हैं।

प्रश्न 8 – जीव के साथ कर्मों का बंधन किन भावों से होता है?

उत्तर – राग–द्वेषादि शुभ–अशुभरूप अशुद्ध भावों से।

आत्मा के परिणाम तीन प्रकार के हैं– संक्लेश, विशुद्ध और शुद्ध। वहाँ तीव्र कषाय रूप संक्लेश हैं, मंद कषाय रूप विशुद्ध हैं, तथा कषायरहित शुद्ध हैं। वहाँ वीतराग विशेष ज्ञान रूप अपने स्वभाव के घातक जो ज्ञानावरणादि घातिया कर्म हैं; उनका संक्लेश परिणामों द्वारा तो तीव्र बन्ध होता है, और विशुद्ध परिणामों द्वारा मंद बंध होता है, तथा विशुद्ध परिणाम प्रबल हों तो पूर्वकाल में जो तीव्र बंध हुआ था उसको भी मंद करता है। शुद्ध परिणामों द्वारा बंध नहीं होता, केवल उनकी निर्जरा ही होती है।

मोक्षमार्गप्रकाशक (पृष्ठ 6)

23. आत्मध्यान

प्रश्न 1 – आत्मानुभूति का एकमात्र उपाय क्या है?

उत्तर – आत्मध्यान।

प्रश्न 2 – आत्मा का ध्यान धर्म क्यों है?

उत्तर – क्योंकि वही हमारा सहज स्वभाव है और उससे ही सच्चा सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न 3 – बाहुबली, महावीर आदि सभी भगवान कैसे बने?

उत्तर – अंतर्मुहूर्त तक लगातार आत्मा का ध्यान करने से।

प्रश्न 4 – आत्मध्यान में उपयोग न लगे तब क्या करना चाहिए?

उत्तर – जिनवाणी का अध्ययन-मनन-चिंतन आदि।

प्रश्न 5 – आत्मध्यान के पूर्व जिनवाणी का अध्ययन क्यों करना चाहिए?

उत्तर – आत्मस्वरूप के निर्णय के लिए आत्मध्यान के पूर्व जिनवाणी का अध्ययन करना चाहिए।

प्रश्न 6 – आत्मध्यान के पश्चात् जिनवाणी का अध्ययन क्यों करना चाहिए?

उत्तर – तत्त्वों को विशेष जानने के लिए, ज्ञान की निर्मलता के लिए और कषायों को मंद रखने के लिए आत्मध्यान के पश्चात् भी शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए। हमें ऐसे ग्रंथ पढ़ना चाहिए, जिनसे रागादिक घटें, बढ़ें नहीं, क्योंकि मात्र आत्मज्ञान से ही मोक्षमार्ग नहीं होता, रागादिक दूर करने पर मोक्षमार्ग होता है।

प्रश्न 7 – आत्मानुभव के पहले क्या करना चाहिए?

उत्तर – आत्मा का स्वरूप द्रव्य-गुण-पर्याय से विस्तार से जानना चाहिए। इसके लिए जिनवाणी का पठन-पाठन, चिंतन-मनन करना चाहिए।

प्रश्न 8 – आत्मा की सच्ची उपासना क्या है?

उत्तर – आत्मा का ध्यान।

24. निजात्मा

प्रश्न 1 – भगवान किसकी उपासना से भगवान बने?

उत्तर – निजात्मा की उपासना से।

प्रश्न 2 – भगवान किसकी उपासना निरंतर कर रहे हैं?

उत्तर – निजात्मा की।

प्रश्न 3 – साधना और आराधना किसकी करनी चाहिए?

उत्तर – निजात्मा की।

प्रश्न 4 – हम भगवान कैसे बन सकते हैं?

उत्तर – निजात्मा की उपासना से।

प्रश्न 5 – निजात्मा से भिन्न समस्त जगत को एक शब्द में क्या कहते हैं?

उत्तर – अनात्मा।

प्रश्न 6 – निजात्मा की उपासना से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – निज को निज रूप मानना।

प्रश्न 7 – निज को निज रूप मानने का फल क्या है?

उत्तर – मोक्ष की प्राप्ति।

प्रश्न 8 – पर को निज रूप मानने का फल क्या है?

उत्तर – चारों गतियों में घूमना (भवभ्रमण)।

प्रश्न 1 – जिनेन्द्र भगवान की भक्ति किस भावना से की जाती है?

उत्तर – उन जैसा बनने की भावना से।

प्रश्न 2 – जैन दर्शन की भक्ति कैसी है?

उत्तर – जैन दर्शन की भक्ति निःस्वार्थ भाव की भक्ति है; क्योंकि उसमें भगवान से कुछ माँगा नहीं जाता है।

प्रश्न 3 – भगवान की सच्ची भक्ति क्या है?

उत्तर – भगवान जैसा बनने का पुरुषार्थ ही उनकी सच्ची भक्ति है।

25. मुक्ति (मोक्ष)

प्रश्न 1 – मुक्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – दुःखों से पूर्णतः छूटना, पूर्ण निराकुल होना।

प्रश्न 2 – आत्मा का हित किस में है?

उत्तर – निराकुल सुख की प्राप्ति में।

प्रश्न 3 – कितने समय में कितने जीव मोक्ष जाते हैं?

उत्तर – ६ माह ८ समय में ६०८ जीव।

प्रश्न 4 – बंध किससे होता है?

उत्तर – आत्मा में उत्पन्न होने वाले मोह-राग-द्वेष रूप भावों से बंध होता है।

प्रश्न 5 – बंध से छूटने का एक मात्र उपाय क्या है?

उत्तर – रत्नत्रय।

दुखों का अंत कैसे होगा?

नाना प्रश्न उठते है मन में?
सुख का आरंभ होगा क्या जीवन में?
जो फंसता है कर्त्तव्य के विकल्पों में,
वो रुलता है चौरासी के चक्कर में।
बचना है यदि तकलीफों से,
तो विकल्प रहित होना होगा।
बचना है यदि चौरासी के चक्कर से,
तो स्वयं में रमना होगा, जमना होगा।
अपने में अपनापन जब होगा,
विकल्पों का अंत तभी होगा।
जब 'शुद्धात्मा' में रमण होगा,
दुखों का अंत तभी होगा।

–डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

26. रत्नत्रय

प्रश्न 1 – रत्नत्रय किसे कहते हैं?

उत्तर – सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र को।

प्रश्न 2 – सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मश्रद्धान और तत्त्वार्थश्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

प्रश्न 3 – सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मज्ञान और तत्त्वज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 4 – सम्यक्चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मलीनता और बाह्य तप आदि क्रियाओं को सम्यक्चारित्र कहते हैं।

प्रश्न 5 – श्रद्धान का श्रद्धेय किसे बनाना चाहिए?

उत्तर – निज-आत्मा को।

प्रश्न 6 – ज्ञान का ज्ञेय किसे बनाना चाहिए?

उत्तर – निज-आत्मा को।

प्रश्न 7 – ध्यान का ध्येय किसे बनाना चाहिए?

उत्तर – निज-आत्मा को।

प्रश्न 8 – क्या रत्नत्रय से बंध होता है?

उत्तर – नहीं, रत्नत्रय मुक्ति का ही कारण है।

प्रश्न 9 – यदि रत्नत्रय में बंध नहीं होता तो फिर रत्नत्रयधारी मुनिराजों को शुभ प्रकृतियों और देवायु का बंध किस अपेक्षा कहा जाता है?

उत्तर – रत्नत्रयधारी मुनिराजों के शुभोपयोग से ही शुभ प्रकृतियों और देवायु का बंध होता है।

प्रश्न 10 – क्या अन्य उपाय से मुक्ति संभव है?

उत्तर – नहीं, रत्नत्रय से ही मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है; अन्य किसी उपाय से नहीं।

27. आहार

प्रश्न 1 – आहार किसे कहते हैं?

उत्तर – उपभोग्य शरीर और छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों के ग्रहण को आहार कहते हैं। यह शरीर नामकर्म के उदय से होता है। औदारिक, वैक्रियक और आहारक – इन तीन शरीरों में से किसी भी एक शरीर, वचन और द्रव्य मन बनने के योग्य नोकर्म वर्गणाओं का ग्रहण ही **आहार** है।

प्रश्न 2 – आहार कितने प्रकार का होता है? नाम बताओ।

उत्तर – आहार ६ प्रकार का होता है– १. लेपाहार २. ओजाहार ३. मानसिक आहार ४. कर्म आहार ५. नोकर्म आहार ६. कवलाहार।

प्रश्न 3 – लेपाहार किसे कहते हैं?

उत्तर – जो सर्वांग शरीर में व्याप्त हो उसे लेपाहार कहते हैं। ये एकेन्द्रिय पाँच स्थावरों के होता है। जैसे– वृक्ष जड़ के द्वारा मिट्टी और जल को खींच सर्वांग अपने शरीर को परिणमाता है।

प्रश्न 4 – ओजाहार किसे कहते हैं?

उत्तर – पक्षियों के अण्डे में रहने वाले जीवों के माता के उदर की ऊष्मा रूप ओज ही आहार है; अत: इसे ओजाहार या ऊष्माहार कहते हैं।

प्रश्न 5 – मानसिक आहार किसे कहते हैं?

उत्तर – मन में इच्छा होने पर गले से अमृत के झर जाने से तृप्त हो जाने को मानसिक आहार कहते हैं। यह चार निकाय के देव–देवांगनाओं को होता है।

प्रश्न 6 – कर्म आहार किसे कहते हैं?

उत्तर – कर्मों के ग्रहण करने को कर्म आहार कहते हैं। जीवों के परिणामों द्वारा प्रतिक्षण कर्मवर्गणाओं का ग्रहण कर्म आहार है। यह सिद्ध और अयोग केवली के अतिरिक्त सभी जीवों के प्रथम गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान के अन्त तक होता है।

प्रश्न 7 – नोकर्म आहार किसे कहते हैं?

उत्तर – वायुमण्डल से प्रतिक्षण स्वत: प्राप्त वर्गणाओं के ग्रहण को नोकर्म आहार कहते हैं। यह आहार पर्याप्ति पूर्ण करने का कारण है। प्रतिसमय जीव आकाश में से नोकर्म जाति की वर्गणाओं का ग्रहण करते हैं तथा पर्याप्ति रूप परिणमाते हैं।

प्रश्न 8 – कवल आहार किसे कहते हैं?

उत्तर – मुख से ग्रास लेने को कवल कहते हैं। अत: खाने–पीने और चाटने की वस्तुओं का मुख द्वारा किये जाने वाले आहार को कवल आहार कहते हैं।

अर्हंत भगवान के यह नहीं होता है, उन्हें नोकर्म आहार होता है; क्योंकि जीव हर अवस्था में निरन्तर नोकर्माहार ग्रहण करता रहता है। प्रत्येक जीव जन्म धारण के प्रथम क्षण से ही आहारक हो जाता है; परन्तु विग्रह गति व केवली समुद्घात में उस आहार को ग्रहण न करने के कारण जीव अनाहारक कहलाता है। इसके अतिरिक्त प्रतर समुद्घात व लोकपूरण प्राप्त सयोग–अयोग केवली और सिद्ध अनाहारक होते हैं।

विशेष बात ध्यान देने की यह है कि जब जो जीव उपपाद क्षेत्र में गमन करते समय ऋजुगति में रहता है, तब आहारक होता है; क्योंकि शरीर छोड़ने व शरीर ग्रहण करने के बीच एक समय का भी अन्तर नहीं पड़ता है।

प्रश्न 9 – आहारक किसे कहते हैं?

उत्तर – जो जीव नियम से उक्त आहार को ग्रहण करता है, वह आहारक कहलाता है।

प्रश्न 10 – अनाहारक किसे कहते हैं?

उत्तर – जो जीव नियम से उक्त आहार को ग्रहण नहीं करता है, वह अनाहारक कहलाता है।

प्रश्न 11 – केवली को आहारक और अनाहारक दोनों कैसे कहा है?

उत्तर – कार्माण आहार और नोकर्म आहार की अपेक्षा आहारक तथा कवलाहार की अपेक्षा अनाहारक कहा है।

28. कषाय और चारित्र

प्रश्न 1 – कषाय और नोकषाय आठ कर्मों में से किस कर्म के अन्तर्गत आते हैं?

उत्तर – चारित्रमोहनीय कर्म।

प्रश्न 2 – कषाय के कितने भेद हैं? नाम बताइये।

उत्तर – कषाय के २५ भेद हैं–

अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ;
अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ;
प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ और
संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ।

हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद – इन नौ को नोकषाय कहते हैं।

प्रश्न 3 – अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कर्म आत्मा के स्वरूपाचरणचारित्र परिणाम को घातते हैं, उन्हें अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ कहते हैं। इस कषाय के तीव्र उदय में जीव को आत्मा के प्रति अत्यंत अरुचि होती है। आत्मा का अनुभव, प्रतीति नहीं हो पाती है। यह अनंत संसार के बंध का कारण है। आत्मा का अनुभव होते ही इन चारों का एकसाथ उपशम, क्षयोपशम या क्षय हो जाता है।

प्रश्न 4 – अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कर्म आत्मा के देशचारित्र परिणाम को घातते हैं, उन्हें अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ कहते हैं अर्थात् इस कषाय के उदय से जीव लेशमात्र भी व्रत धारण नहीं कर पाते हैं। देशव्रत धारण करने पर इनका भी उपशम, क्षयोपशम या क्षय हो जाता है।

प्रश्न 5 – प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कर्म आत्मा के सकलचारित्र परिणाम को घातते हैं, उन्हें प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ कहते हैं अर्थात् इस कषाय के उदय से जीव महाव्रत धारण नहीं कर पाते हैं। महाव्रत धारण करने पर इनका भी उपशम, क्षयोपशम या क्षय हो जाता है।

प्रश्न 6 – संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ और नोकषाय किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कर्म आत्मा के यथाख्यातचारित्र परिणाम को घातते हैं, उन्हें संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ और नोकषाय कहते हैं। यद्यपि संज्वलन कषाय और नोकषाय में अन्तर है तथापि दोनों का अभाव साथ–साथ होता है और यथाख्यातचारित्र को घातने की अपेक्षा दोनों में समानता है; अत: इन्हें साथ–साथ लिया है।

प्रश्न 7 – चारित्र के कितने भेद हैं?

उत्तर – चारित्र के चार भेद हैं– स्वरूपाचरणचारित्र, देशचारित्र, सकलचारित्र और यथाख्यातचारित्र।

प्रश्न 8 – स्वरूपाचरणचारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मस्वरूप में लीनता होने पर होने वाली शुद्धि को स्वरूपाचरणचारित्र कहते हैं। आत्मा के स्वरूप में लीन होने पर अनन्तानुबंधी कषाय चौकड़ी (क्रोध, मान, माया, लोभ) का उपशम, क्षयोपशम या क्षय होता है और सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है; अत: इसे सम्यक्त्वाचरणचारित्र कहते हैं। यह चारित्र चौथे गुणस्थान से ही आरम्भ हो जाता है।

प्रश्न 9 – देशचारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर – श्रावक के व्रतों (अणुव्रतों) को देशचारित्र कहते हैं।

प्रश्न 10 – सकलचारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर – मुनियों के व्रतों (महाव्रतों) को सकलचारित्र कहते हैं।

प्रश्न 11 – यथाख्यातचारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर – कषायों के सर्वथा अभाव से होनेवाली आत्मा की शुद्धि विशेष को यथाख्यातचारित्र कहते हैं।

लेखिका की अन्य कृतियाँ

01. जैन नर्सरी (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
02. जैन के.जी. भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
03. जैन के.जी. भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
04. जैन के.जी. भाग-3 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
50-06. जैन कलर बुक भाग 1-2 (ड्राइंग बुक)
07-10. जैन जी.के. भाग-1 से 4 तक (हिन्दी, अंग्रेजी)
11-16. जैन जी.के. भाग-5 से 10 तक (हिन्दी)
17-18. चलो पाठशाला, चलो सिनेमा भाग 1-2
19. सीखें हम गाते-गाते
20. शब्दों की रेल
21-23. आगम प्रवेश भाग-1,2,3
24. मुझमें भी एक दशानन रहता है
25. संस्कार का चमत्कार (दादी की कहानी)
26. बढ़ते कदम
17. राम कहानी
28. विचार के पत्र : विकार के नाम
29. तलाश : सुख की
30. मुक्ति की युक्ति
31. एक संभावना यह भी
32. सत्ता का सुख
33. बालबोध प्रशिक्षण गाईड
34. प्रवेशिका प्रशिक्षण गाईड
35. अर्चना गाईड
36. नयचक्र गाईड (अध्यात्म के नय)
37. आगम के नय
38. अनुपम खोज (सप्तभंगी टीका)
39. परीक्षामुख प्रवेशिका (टीका)
40. उपादान निमित्त दोहा (टीका)
41. प्रमाणज्ञान
42. आत्मानुभूति कैसे?
43. जैनदर्शनसार
44. आचार्य अमृतचन्द्र और उनका पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (लघु शोध)
45. आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार : एक समालोचनात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध)
46. मिनी समयसार
47. समयसार प्रश्नोत्तरमाला भाग-1
48-50. परमागम प्रवेशिका भाग-1, 2, 3/4
51. प्रमाणज्ञान : सम्यग्ज्ञान

जैन गेम्स

1. नो टाइम पास
2. हमारी लाईफ
3. लगे रहो जीवराज
4. चौबीसी (Poster)
5. Maze to Moksh

E-books

01. मिनी समयसार भाग -1
02. मिनी समयसार भाग -2
03. परमागम प्रवेशिका भाग - 1
04. परमागम प्रवेशिका भाग - 2
05. परमागम प्रवेशिका भाग - 3
06. परमागम प्रवेशिका भाग - 4
07. मीडियम समयसार भाग - 1
08. प्रमाणज्ञान : सम्यग्ज्ञान
09. समयसार प्रश्नोत्तरमाला : भाग-1